P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-2* October- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

बी. एड. छात्राध्यापकों की मूक बधिर बच्चों के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

B. Ed. Study of Student Teachers' Aptitude Towards Deaf Children

Paper Submission: 15/10/2020, Date of Acceptance: 25/10/2020, Date of Publication: 26/10/2020

मुकेश कुमार गुप्ता
प्राचार्य
शिवा एजुकेशनल इंस्टीट्यूट
मोदीनगर, भारत

सारांश

"हम देह से अधूरे पर आत्मा से पूरे ,
पूरे शरीर वालों गले लगा ले"

विकलांग वर्ग सदा ही उपेक्षित वर्ग रहा है उपेक्षा ही नही धृण भी इनके प्रति देखने में आती है। प्राचीन काल से ही मानव समाज ने विकलांगों को उचित सम्मान एवं अधिकार नहीं दिया। ऐसा क्यों किया गया । इस प्रश्न का उत्तर देना बहुत ही मुश्किल है।

दिन बदलते है, साल गुजरते है, और सदियां इतिहास के पन्नों में सिमट कर रहे जाती है। बीसवी सदी भी अब इतिहास बन चुकी है और इक्कीसवी सदी शुरू हो गयी है। देश में हर जगह आज भी मूक बधिर बच्चों के साथ मानवता का व्यवहार नहीं किया जाता है आज भी ये बच्चे अपने को समाज से अलग समझते है। इन बच्चों में विभिन्न प्रकार की क्षमताएं मौजूद होती है लेकिन उन क्षमताएं मौजूद होती है लेकिन उन क्षमताओं का समाज के उत्थान में प्रयोग नहीं किया जा रहा है। इनमें मौजूद क्षमताओं का उपयोग समाज तभी कर सकता है जबकि उनके प्रति समानता का व्यवहार किया जाय। अर्थात् समाज कर इन बच्चों के प्रति अभिवृत्ति सकारात्मक है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए " बी. एड. छात्राओं कर मूक बधिर बच्चों के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन " नामक समस्या को चुना है।

"We are incomplete from the body but full of the soul,
Full body hugs "

The handicapped class has always been a neglected class. Since ancient times, human society did not give proper respect and authority to the disabled. Why was this done? This question is very difficult to answer.

Days change, years pass, and centuries are confined to the pages of history. Twentieth century has also become history and twenty-first century has started. Humanity is not treated with silent deaf children everywhere in the country even today, these children consider themselves different from society. These children have different types of abilities but those capabilities exist but those abilities are not being used in the upliftment of the society. The society can use its capabilities only when it is treated equally. That is, the society is positive towards these children. Keeping this in mind, "B. Ed. Students have chosen a problem called "Study of aptitude towards deaf and dumb children".

मुख्य शब्द : बी. एड., विकलांग, मूक बधिर बालक ।
B. Ed., Disabled, deaf child.

प्रस्तावना

विकलांग वर्ग सदा ही उपेक्षित वर्ग रहा है उपेक्षा ही नही धृण भी इनके प्रति देखने में आती है। प्राचीन काल से ही मानव समाज ने विकलांगों को उचित सम्मान एवं अधिकार नहीं दिया। ऐसा क्यों किया गया । इस प्रश्न का उत्तर देना बहुत ही मुश्किल है।

दिन बदलते है, साल गुजरते है, और सदियां इतिहास के पन्नों में सिमट कर रहे जाती है। बीसवी सदी भी अब इतिहास बन चुकी है और इक्कीसवी सदी शुरू हो गयी है। देश में हर जगह आज भी मूक बधिर बच्चों के साथ मानवता का व्यवहार नहीं किया जाता है आज भी ये बच्चे अपने को समाज से अलग समझते है। इन बच्चों में विभिन्न प्रकार की क्षमताएं मौजूद

होती है लेकिन उन क्षमताएं मौजूद होती है लेकिन उन क्षमताओं का समाज के उत्थान में प्रयोग नहीं किया जा रहा है। इनमें मौजूद क्षमताओं का उपयोग समाज तभी कर सकता है जबकि उनके प्रति समानता का व्यवहार किया जाय। अर्थात् समाज कर इन बच्चों के प्रति अभिवृत्ति सकारात्मक है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए " बी. एड. छात्राओं कर मूक बधिर बच्चों के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन नामक समस्या को चुना है।

समस्या कथन

"बी. एड. छात्राध्यापकों की मूक बधिर बच्चों के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन "।

अध्ययन के उद्देश्य

1. बी.एड. छात्राध्यापकों की मूक बधिर बच्चों के प्रति अभिवृत्ति का लैगिक सन्दर्भ में अध्ययन करना।
2. बी.एड. छात्राध्यापकों की मूक बधिर बच्चों के प्रति अभिवृत्ति का आर्थिक, सामाजिक,परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करना।
3. बी.एड. छात्राध्यापकों की मूक बधिर बच्चों के प्रति अभिवृत्ति का क्षेत्रीयता के सन्दर्भ में अध्ययन करना।

समस्या की आवश्यकता

आज का मानव ज्यों ज्यों भौतिक क्षेत्र में उन्नति करता है, त्यों त्यों उसमें नैतिक मूल्यों का भी पतन होता जा रह है। आज का मानव केवल अपने ही विकास की बात सोचता है। उसे समाज, समाज के लोगों तथा समाज के विकास के बारे में सोचने का अवसर ही नही मिलता है। विकलांग बालक जोकि समाज का ही अंग है उसके बारे में समाज के सामान्य लोगों का दृष्टिकोण उचित नही है। उसे वह हीनता के दृष्टिकोण से देखता है। जिससे उसका शारीरिक मानसिक तथा सांवेगिक विकास अवरूद्व होता है।

अतः मूक बधिर बालकों के शारीरिक, मानसिक, बौद्विक, शैक्षिक तथा आर्थिक विकास के लिए यह शोध जरूरी है। इसलिये यह शोधकर्ता ने इस विशय को शोध हेतू चुना है।

समस्या का सीमांकन

शोधकार्य ने लैगिक, आर्थिक, सामाजिक तथा क्षेत्रीयता के आधार पर मूक बधिर बच्चों के प्रति बी.एड. छात्राध्यापकों की अभिवृत्ति का अध्ययन करने के लिए के विभिन्न शिक्षिक प्रशिक्षक संस्थानों में अध्ययनरत् महिला एवं पुरूष छात्राध्यापकों का चुना है।

परिकल्पना

1. पुरूष एवं महिला बी.एड. छात्राध्यापकों की मूक बधिर बच्चों के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. शहरी एवं ग्रामीण पुरूष बी. एड़ छात्राध्यापकों की मूक बधिर बच्चों के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. शहरी एवं ग्रामीण महिला बी.एड छात्राध्यापकों की मूक बधिर बच्चों के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. अर्थिक स्थिति से कमजोर शहरी एवं ग्रामीण पुरूष बी. एड़ छात्राध्यापकों की मूक बधिर बच्चों के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5. अच्छा अर्थिक स्थिति शहरी एवं ग्रामीण पुरूष बी. एड़ छात्राध्यापकों की मूक बधिर बच्चों के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
6. अर्थिक स्थिति से कमजोर शहरी एवं ग्रामीण महिला बी. एड़ छात्राध्यापकों की मूक बधिर बच्चों के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
7. अच्छा अर्थिक स्थिति शहरी एवं ग्रामीण महिला बी. एड़ छात्राध्यापकों की मूक बधिर बच्चों के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

न्यादर्श एवं विधि

प्रस्तुत शोध में बी, एड़ छात्राध्यापकों की मूक बधिर बच्चों के प्रति अभिवृत्ति के अध्ययन हेतू समय की नयूनता को ध्यान में रखते हुए उद्वेश्यपूर्ण प्रतिदर्श विधि के आधार पर विभिन्न शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं को भी न्यादर्श के रूप में चुना गया है।

उपकरण

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में स्वनिर्मित अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकी

परीक्षण के प्रशासन के उपरान्त अभिवृत्ति प्राप्तांकों द्वारा परिणाम प्राप्त करने के लिये प्रदत्तों को सारणीबद्व कर मध्यमान, मानक विचलन, क्रान्तिक अनुपात इत्यादि सबके मान ज्ञात किये गये है।

परिकल्पना – 1

"पुरूष एवं महिला बी0एड0 छात्राध्यापकों की मूक बधिर बच्चों के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है"।

तुल्य समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रानितक अनुपात
पुरूष छात्राध्यापक	100	103.4	10.38	3.05
महिला छात्राध्यापक	100	99.00	9. 96	

N=200 ; df = N1 + N2 – 2 = 198

उक्त परिकल्पना के संदर्भ में यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि बी0एड0 कक्षाओं में अध्ययनरत् पुरूष एवं महलि छात्राध्यापकों की मूक बधिर बच्चों के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है। अर्थात् पुरूष छात्राध्यापकों का मूक बधिर बच्चों के प्रति दृष्टिकोण महलि छात्राध्यापिकाओं के दृष्टिकोण से भिन्न है। प्राप्त मध्यमान के मन को देखने पर यह निष्कर्ष निकालता है कि पुरूष छात्र मूक बधिर बच्चों के प्रति महिला छात्राओं की अपेक्षा अधिक झुकाव रखते हैं।

परिकल्पना–2

"शहरी एवं ग्रामीण पुरूष बी0एड़0 छात्राध्यापकों की मूक बधिर बच्चों के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है"।

तुल्य समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात

शहरी पुरूष छात्राध्यापक	50	99.6	9.99	.60
ग्रामीण पुरूष छात्राध्यापक	50	100.8	9.96	

N=100 ; df = N1 + N2 – 2 = 98

उक्त परिकल्पना को सांख्यिकी गणना के आधार पर स्वीकृत किया जाता है तथा इस आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि बी0एड़0 कक्षाओं में अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण पुरूष छात्राध्यापकों की मूक बधिर बच्चों के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक नही है। अर्थात् शहरी एवं ग्रामीण पुरूष छात्राध्यापकों का मूक बधिर बच्चों के प्रति दृष्टिकोण समान है। प्रायः यह देखा जाता है। कि शहरी पुरूष ग्रामीण पुरूषों की अपेक्षाकृत अधिक संवेदनशील होते हैं। लेकिन यहां पर यह विचारधारा निरर्थक सिद्व हो रही है।

परिकल्पना –3

"शहरी एवं ग्रामीण महिला बी0एड़0 छात्राध्यापकों की मूक बधिर बच्चों के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही हैं।

तुल्य समूह	**संख्या**	**मध्यमान**	**मानक विचलन**	**क्रानितक अनुपात**
शहरी पुरूष छात्राध्यापक	50	97.2	9.57	2.67
ग्रामीण पुरूष छात्राध्यापक	50	102.4	9.99	

N=100 ; df = N1 + N2 – 2 = 98

प्राप्त आंकडों के आधार पर उक्त शून्य परिकल्पना को निरस्त किया गया है तथा कही जा सकता है कि शहरी एवं ग्रामीण महिलाओं की मूक बधिर बच्चों के प्रति दृष्टिकोण भिन्न भिन्न है। शहरी महिलाओं का मूक बधिर बच्चों के प्रति दृष्टिकोण ग्रामीण महिलाओ के दृष्टिकोण से भिन्न है अर्थात् ग्रामीण महिलाओं मूक बधिर बच्चों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखती है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध में परिकल्पनाओं के अनुसार बी.एड. छात्रध्यापकों की मूक बधिर बच्चों के प्रति अभिवृत्ति से जो निष्कर्ष प्राप्त हुए उसका परिकल्पनाओं का विवरण निम्नलिखित है।

भावी शोध हेतू सुझाव

1. भावी लधु शोध हेतू यह सुझाव दिया जाता है कि छात्र एवं छात्राओं के परिवार के सामाजिक अर्थिक स्तर व वातावरण को समूह (वर्गों) में विभक्त करके अध्ययन किया जा सकता हैं
2. भावी लधु शोध कार्यों में छात्र–छात्राओं को न लेकर स्त्री–पुरूष को भी लिया जा सकता है।
2. शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों के अलावा माध्यमिक या उच्चतर कक्षाओं के शिक्षकों व प्रधापाध्यापकों को लेकर भी भविष्य में शोध किया जा सकता है।
3. भावी शोध में गााजियाबाद जनपद के अलावा या अन्य शहरों के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
4. भविष्य में मण्डल स्तर पर शोध किया जा सकता है।
5. भविष्य में अभिवृत्ति के अलावा अन्य क्षेत्रों को लेकर भी शोध किया जा सकता है।
6. प्रस्तुत लधु शोध में केवल मूक बधिरों के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया है। मूक बधिर प्रौढों के प्रति समाज की अभिवृत्ति को भावी शोध हेतू चुना जा सकता है।
7. जातीयता को ध्यान में रखकर इस लधु शोध प्रबन्ध का संपादन नहीं किया गया है। अतः जातीयता के परिप्रेक्ष्य में भी कार्य संपादन किया जा सकता है।

BIBLIOGRAPHY

1. *Berkson, G: the social ecolorgy of defects in primates. In S.Skolni Kaff 2 F, Pairier, primate Bio social Development, New York, Garland,1977, p p.189 - 204.*
2. *Buch,M.B.: Fourth survey of Research in Education 83 - 84.*
3. *Chattopadhy, A: All india directory of education and vocational training institute for the handicapped. Priiot, New Delhi 1986.*
4. *Chawia: Sarita March,2,1993 Delhi press Bhawan New Delhi.*
5. *Cambs, R.H& Harper, J.L. : Effects of lables on attitude of education towards handicapped children, Exceptional Children, 1967 – 73 , 399 - 403.*
6. *Kessler,(1935): Crippled and the disabled , New York, Columbia University press,1935,p.12.*